कंचना कुमारी
अतिथि शिक्षक, हिन्दी
यू. आर. कॉलेज, रोसड़ा

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा
पार्ट II

(1) 'निराला की प्रगति-चेतना'

निराला जी के सम्पूर्ण काव्य में उपेक्षित दलित के अन्वयन और जन साधारण की प्रतिष्ठा के प्रति गहरी आस्था के दर्शन होते हैं। निराला जी किसी विचारधारा से प्रेरित होकर किसी समय विशेष में उपेक्षित के प्रति अपनी सहानुभूति को अभिव्यक्ति नहीं किया, इसका परिणाम उनका काव्य स्वयं है। उनकी रचना यात्रा को जिस स्वच्छंदतावादी और यथार्थवादी खांचों में बाँटा जाता है। उनकी चेतना के बीच अंतः संबंधों का एक सिलसिला है। जिस तरह पश्चिम में स्वच्छंदतावादी कवि बायरन, कीट्स, वर्ड्सवर्थ शेली यातनाग्रस्त मानव के पक्षधर रहे हैं। उसी तरह निराला जी भी अपने पूर्ववर्ती काव्य में इसी पक्षधरता का स्थान-स्थान पर परिचय देते हैं।

वह आता
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता

- - - - - - - - -

वह क्रूर काल तांडव की स्मृति-रेखा सी
वह टूटे तरु की छुटी लता-सी दीन
दलित भारत की विधवा है

- - - - - - - - -

देखा मुझे उस दृष्टि से जो मार खा रोई नहीं

निराला की 'बादलराग' कविता (परिमल) और 'तोड़ती पत्थर' कविता (अनामिका) में हम देखते हैं।

Scanned with CamScanner

(2) कि निराला यातनाग्रस्त मानवता के पक्षधर होकर अन्यायी और आततायी शक्तियों के विरुद्ध संघर्ष का बिगुल बजाते हैं —

जीर्णबाहु है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर ॥